**हिंदी-छत्तीसगढ़ी एवं संस्कृत**

**कक्षा - 4**

सत्र 2019-20

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  | DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें? |  |
| विकल्प 1: अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।विकल्प 2: Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें। |

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें

|  |
| --- |
| DIKSHA को लांच करें —> App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें—> उपयोगकर्ता Profile का चयन करें |

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
|  |  |  |
| पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें। | मोबाइल को QR Code पर केन्द्रित करें। | सफल Scan के पश्चात QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी |

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय-वस्तु तक कैसे पहुँचें

|  |  |
| --- | --- |
| 1- QR Code के नीचे 6 अंकों का AlphaNumeric Code दिया गया है। | ब्राउजर में diksha. gov.in/cg टाइप करें। |
| सर्च बार पर 6 डिजिट का QRCODE टाइप करें। |  प्राप्त विषय-वस्तु की सूची से चाही गई विषय-वस्तु पर क्लिक करें।  |

**राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण पारिषद छत्तीसगढ़, रायपुर**

**निःशुल्क वितरण हेतु**

प्रकाशन वर्ष 2019

**© राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर**

**मार्गदर्शन एवं सहयोग**

**डॉ. हृदयकांत दीवान, विद्या भवन, उदयपुर,**

**प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री (दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)**

**संयोजक**

**डॉ. विद्यावती चन्द्राकर**

**संपादन**

**डॉ. सी.एल. मिश्रा, विद्या डांगे**

मेरी अभिलाषा है- द्वारिका प्रसाद महेश्वरी, दीप जले - चन्द्रदत्त ‘इन्दु’, कुंडलियाँ- कोदूराम दलित, चूड़ीवाला -सेफाली मल्लिक, अमीर खुसरो की पहेलियाँ - अमीर खुसरो,किताबें - श्री सफदर हाशमी, शेष पाठ लेखक मण्डल द्वारा संकलित या लिखित हैं।

**लेखक मण्डल**

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| हिंदी | छत्तीसगढ़ी | संस्कृत |
| डॉ. सी.एल.मिश्र, बी. आर. साहू,डॉ. एस.एस. त्रिपाठी, डॉ. बृजमोहन इष्टवाल, गजानन्द प्रसाद देवांगन, राजेन्द्र पाण्डेय, श्रीमती सीमा अग्रवाल, विनय शरण सिंह, दिनेश गौतम, श्री धीरेन्द्र कुमार, डॉ.(श्रीमती) रचना अजमेरा, श्रीमती उषा पवार, शोभा शंकर नागदा। | डॉ. जीवन यदु,डॉ. पी.सी. लाल यादव,विनय शरण सिंह,डॉ, माघीलाल यादवटी. के. साहू, | डॉ. सुरेश शर्मा,बी.पी. तिवारी, (समन्वयक)डॉ. कल्पना द्विवेदी,ललित कुमार शर्मा,डॉ. संध्यारानी शुक्ला,डॉ. राजकुमार तिवारी |

**चित्रांकन**

समीर श्रीवास्तव, प्रशांत सोनी, रानू सिंह, भूपेन

**आवरण पृष्ठ एवं ले-आऊट**

रेखराज चौरागड़े

**प्रकाशक**

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

**मुद्रक**

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

**मुद्रणालय**

**मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ........................**

**प्राक्कथन**

 हिन्दी भाषा-शिक्षण का स्कूली शिक्षा में एक अहम स्थान है। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से सबद्ध सभी लोगों के लिए यह आस-पास के वृहद् जगत के संवाद का माध्यम है। कक्षा एक की ही पुस्तकों से छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का उद्देश्य बच्चों को स्वतंत्र व जिज्ञासु पाठक बनाना है। परिषद् की पुस्तकों ने यह भी रेखांकित किया है कि भाषा सीखने-सिखाने का दायित्व सिर्फ भाषा की पाठ्य-पुस्तक पर ही नहीं है, वरन् इस दिशा में और सभी विषय-विशेष तौर पर पर्यावरण अध्ययन-मदद कर सकते हैं। आस-पास उपलब्ध बच्चों के योग्य अन्य पुस्तकों की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका है। अपने स्वाभाविक अनुभवों के बारे में सोचना, उनका गहराई से विश्लेषण करना व इन सबको दूसरों के साथ बाँटना न सिर्फ भाषायी समझ बढ़ाता है, वरन् कई और क्षमताएँ भी प्रदान करता है।

 कक्षा 4 में पढ़ने वाले बच्चे अपने आस-पास के जीवन के बारे में सोचना व समझना शुरू कर देते हैं। इस समझ को पैदा करने के लिए आवश्यक शब्दावली, वाक्य-संरचना, तार्किक क्रमबद्धता का बड़ा हिस्सा भाषा की कक्षा से ही उसे मिलेगा। कहानी, कविता, निबंध, नाटक आदि साहित्य की विधाएँ तो हैं ही, साथ-साथ सोचने व समझने के तरीकों को वृहद् भी बनाती हैं। इन सभी में बच्चे को रुचि हो, यही भाषा-शिक्षण का एक प्रमुख लक्ष्य है। भाषा की कक्षा अक्सर पुस्तक में दिए सवालों के उत्तर खोजने तक ही सीमित हो जाती है। यदि भाषा-शिक्षण व साहित्य को बच्चे के विकास व समाज के साथ संबंध को गहरा करने व उसके सोचने व जीवन-दर्शन को वृहद् करने का लक्ष्य पूरा करना है तो यह आवश्यक है कि उसका पुस्तक की सामग्री के साथ सतर्क पाठक का रिश्ता बने। इसके लिए वह सामग्री पर आधारित नये प्रश्न गढ़े, अपने जीवन के आधार पर सामग्री में प्रस्तुत विचारों पर टिप्पणी करे।

 सामग्री के बारे में बच्चे सोचें-विचारें, सवाल करें और अपनी राय बनाएँ, यह सब कक्षा 4 में करवाना संभव नहीं है। किन्तु यदि हमें यह स्पष्ट हो कि किस दिशा में बढ़ना है तो हमारे छोटे कदम भी ज्यादा अच्छे लाभकारी हो सकते हैं।

 कक्षा 4 में हम यह भी अपेक्षा करते हैं कि बच्चे टोलियों में काम करना सीखंे, एक दूसरे की मदद करें, विचारों का आदान-प्रदान करें। हमारी कोशिश है कि उन्हें एक वृहद् व जीवन्त भाषायी अनुभव मिले।

इस पुस्तक को तैयार करने में शिक्षाविदों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों तथा स्कूली शिक्षा से जुड़े साथियों का सक्रिय सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। इसके बावजूद भी पुस्तक में सुधार करने और नया जोड़ने की संभावनाएँ तो होंगी ही।

 सत्र 2017-18 में लर्निंग आउट कम्स को पूरे देश में कक्षावार, विषयवार लागू किया गया। जिसके कारण किताबों में संशोधन किया जाना आवश्यक हो गया। इस पर शिक्षकों, पालकों, शिक्षाविदों, बच्चों से पर्याप्त चर्चा की गई तथा जो सुझाव हमें प्राप्त हुए उनसे हिन्दी समीति के सदस्यों ने गंभीरता से विचार किया और पुस्तक में तदानुसार विशेषकर प्रश्नों के स्वरूप में बदलाव किया गया। यह पुस्तक राज्य के सभी शासकीय/अशासकीय विद्यालयों के लिए प्रकाशित की जा रही है।

 इस पुस्तक को और बेहतर बनाने के लिए अपने अमूल्य सुझाव परिषद् को भेजें। इसी उम्मीद और शुभ कामनाओं के साथ।

 संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

**शिक्षकों के लिए**

 छत्तीसगढ़ राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा तैयार की गई कक्षा चार की पुस्तक तीन वर्षों के प्रायोगिक दौर से गुजरकर अब आपके सामने है। भाषा सीखने-सिखाने के बारे में सोचते समय हमने यह महत्वपूर्ण समझा है कि बच्चे अपने आस-पास की दुनिया को जानना चाहते हैं, समझना चाहते हैं। वे यह सब अपने स्वाभाविक जीवन में करते रहते हैं और अपने आसपास के बारे में कई बातें जानते हैं। उनके अनुभवों को गहरा करने व विश्लेषण करने में भाषाई क्षमताएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कक्षा चार के स्तर पर बच्चों की भाषाई क्षमताएँ को आगे बढ़ाने हेतु यह पुस्तक एक आधार सामग्री के रूप में है। यहाँ उद्देश्य केवल यह नहीं है कि बच्चे इस पुस्तक को पढ़ें वरन् भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु आवश्यक है कि बच्चे अधिकाधिक पुस्तकें पढ़ें। भाषा-शिक्षण का उद्देश्य बच्चों को सक्षम पाठक बनाने के साथ-साथ सोचने-विचारने, चिंतन करने, विचारों को विस्तारित करने, कल्पना करने तथा नई बातें सीखने के लिए तैयार करना है। यह आवश्यक है कि कक्षा 4 के विद्यार्थी सुनी हुई व पढ़ी हुई सामग्री को समझ सकें, उनकी सार्थक विवेचना करने के प्रयास कर सकें और अपने मत व विचार लिखकर समझा सकंे। पुस्तक में विविधता इसलिए रखी गई है कि साहित्य पढ़ने में उनकी रुचि पैदा हो व उनमें पढ़ने की आदत का विकास हो सके।

 इस पुस्तक में गतिविधियों के माध्यम से अभ्यास के अवसर दिए गए हैं। इनमें कुछ गतिविधियाँ ऐसी हैं जिनमें बच्चों को शिक्षक या अन्य किसी की मदद की भी जरूरत होगी। कुछ गतिविधियाँ ऐसी हैं जिन्हें बच्चों को एक-दूसरे की मदद करते हुए करनी हैं और कुछ गतिविधियाँ ऐसी हैं जिन्हें बच्चों को अकेले अपने आप करना है। कृपया बच्चों को आपस में विचार-विमर्श व संवाद का पर्याप्त मौका दें।

 प्रत्येक पाठ के अंत में अपरिचित व कठिन शब्द तथा उनके अर्थ दिए गए हैं। बच्चों के साथ इन शब्दों के अर्थ पर बातचीत करें तथा इनका अलग-अलग संदर्भों में उपयोग करवाएँ। बच्चे जितने अधिक वाक्य व विवरण इन शब्दों का उपयोग करके लिखेंगे, उतना अच्छा है। किसी भी विधा यथा कहानी, कविता, नाटक, वर्णन, जीवनी, पत्र आदि का अध्ययन-अध्यापन व उस पर अभ्यास करने के एक से अधिक तरीके हो सकते हैं। इसी प्रकार के कुछ उदाहरण मौखिक प्रश्नों शीर्षक में दिये गए हैं।

पाठ की विषयवस्तु को समझने, उस पर चिंतन करने, कल्पना करने के लिए पाठ में बोध-प्रश्न दिए गए हैं। बोध-प्रश्न में मौखिक और लिखित दोनों प्रकार के प्रश्न दिए गए हैं। ये प्रश्न सिर्फ उदाहरण स्वरूप हैं। हर पाठ पर कई और प्रश्न बनाए जा सकते हैं। आप बच्चों को नए मौखिक प्रश्न बनाकर एक दूसरे से पूछने के लिए प्रेरित करें। लिखित प्रश्न भी कई प्रकार के हैं। कुछ तो सीधे-सीधे सूचना आधारित प्रश्न हैं, जो सीधे पाठ से खोजे जा सकते हैं; कुछ कार्य-कारण संबंधवाले प्रश्न हैं तथा कुछ कल्पना व सृजनात्मकता का विकास करनेवाले प्रश्न हैं। इन प्रश्नों के उत्तर अगर वे दें तो वे ज्यादा सीखेंगे। यह भी कोशिश करें कि प्रश्नों के उत्तर बच्चे अपनी भाषा में ही लिखें।

 इसके बाद भाषा-तत्व एवं व्याकरण से संबंधित भी कुछ अभ्यास हैं। इस भाग में शब्दों व वाक्यों का श्रुतिलेखन भी करवाना है। वर्तनी की जाँच के लिए बच्चों को परस्पर एक-दूसरे की अभ्यास-पुस्तिका देखने को कहें, उन्हें अलग-अलग प्रकार के उत्तर समझने और शब्दों के शुद्ध व अशुद्ध रूप को पहचानने में मदद मिलेगी। यह भी अपेक्षा है कि आप बच्चों को सुन्दर लेख लिखने का अभ्यास कराएं।

 रचना के अभ्यास के लिए सृजनात्मक एवं योग्यता-विस्तार शीर्षर्कों के अंतर्गत अभ्यास दिए गए हैं। अपेक्षा यह है कि बच्चे अपने स्तर पर कोई नया सृजन करने का प्रयास करें। इसमें अलग-अलग अभ्यास हैं जैसे कहीं बच्चों को पूछकर, ढूँढकर, पढ़कर या सोचकर लिखना है अथवा प्रदर्शित करना है। इसमें चित्र संकलित कर एलबम बनाना, किसी पक्षी जानवर आदि का चित्र स्वयं बनाना; कविता बनाना, किसी दृश्य या घटना को देखकर उस पर अपने विचार लिखना आदि सम्मिलित हैं।

 रचना और गतिविधिवाले क्रियाकलापों से बच्चों का रचनात्मक और सृजनात्मक विकास होगा। बच्चों में कला संबंधी और लेखन संबंधी जागरुकता आएगी। समय-समय पर कक्षा या बाल-सभा में वाद-विवाद आयोजित करवाना, अन्त्याक्षरी करवाना, चित्र-निर्माण करवाना, पत्र-पत्रिकाओं से सामग्री एकत्रित करवाना, ऐतिहासिक स्थलों पर भ्रमण करवाना तथा उन पर संक्षिप्त लेख लिखवाना आदि क्रियाकलापों से भी बच्चों की क्षमताओं में अभिवृद्धि होगी।

आप सबको अध्यापन करने का लम्बा अनुभव है। आपके इस लम्बे अनुभव से निःसंदेह बच्चे लाभान्वित होंगे। हमारे द्वारा सुझाए कुछ सुझावों पर आप अमल करें, तो हो सकता है कि आपकी शिक्षण-कला में इससे कुछ बढ़ोत्तरी हो। यदि ऐसा हुआ तो हम अपने प्रयास को सार्थक समझेंगे। आपके द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

 संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

 छत्तीसगढ़, रायपुर

**विषय-सूची**

**क्र. पाठ का नाम पृ.क्र.**

 **हिन्दी**

1. मेरी अभिलाषा है 1-3

2. मैनपाट की सैर 4-8

3. सावन आगे (छत्तीसगढ़ी) 9-12

4. साहसी रूपा 13-17

5. मेरा एक सवाल 18-21

6. औद्योगिक तीर्थ - कोरबा 22-26

7. घरौंदा 27-31

8. कोलिहा खोलिस चश्मा दुकान (छत्तीसगढ़ी) 32-37

9. दीप जले 38-41

10. संत रविदास 42-47

11. जीत खेल भावना की 48-53

12. कूकू और भूरी 54-60

13. अनदान के परब-छेरछेरा (छत्तीसगढ़ी) 61-64

14. ऊर्जा की बचत 65-67

15. चूड़ीवाला 68-72

16. राजिम मेला (सहेली को पत्र) 73-77

17. चल रे तुमा बाटे-बाट (छत्तीसगढ़ी) 78-81

18. पिंजरे का जीवन 82-86

19. हाय मेरी चारपाई 87-90

20. अमीर खुसरो की पहेलियाँ 91-93

21. बगरे हे चंदा अंजोर (छत्तीसगढ़ी) 94-99

22. किताबें 100-102

23. डॉ. जगदीश चन्द्र बोस 103-108

24. इंसाफ 109-118

 पुनरावृत्ति के प्रश्न 119-123

 **संस्कृत**  124-136